फिरकी बच्चों की
Firkee Bachchon Ki
वर्ष 2 अंक 2 दिसंबर 2020
अर्द्धवार्षिक पत्रिका

परछाईं

रात अँधेरी अजब रोशनी छाई है,

परछाईं से खेल रही परछाईं है।

श्याम सुशील

चित्रांकन— शशि शेट्ये

परछाईं 2

लावा ढुरके तीतर ढुरके 4

ईदगाह 6

किस्से और गीत 11

बीचों-बीच 12

हाथी आया हाथी आया 14

आके टपकी 16

चटोरी चींटी 18

कुछ हम लिखें कुछ तुम लिखो! 20

Aunty Uma and Nimi 22

देखो, मैंने क्या बनाया! 23

झूलम-झूली 24

लावा ढुरके तीतर ढुरके

लावा ढुरके तीतर ढुरके
और ढुरके मजूर,
बड़े सबेरे उठकर देखो
भग गए कतना दूर।
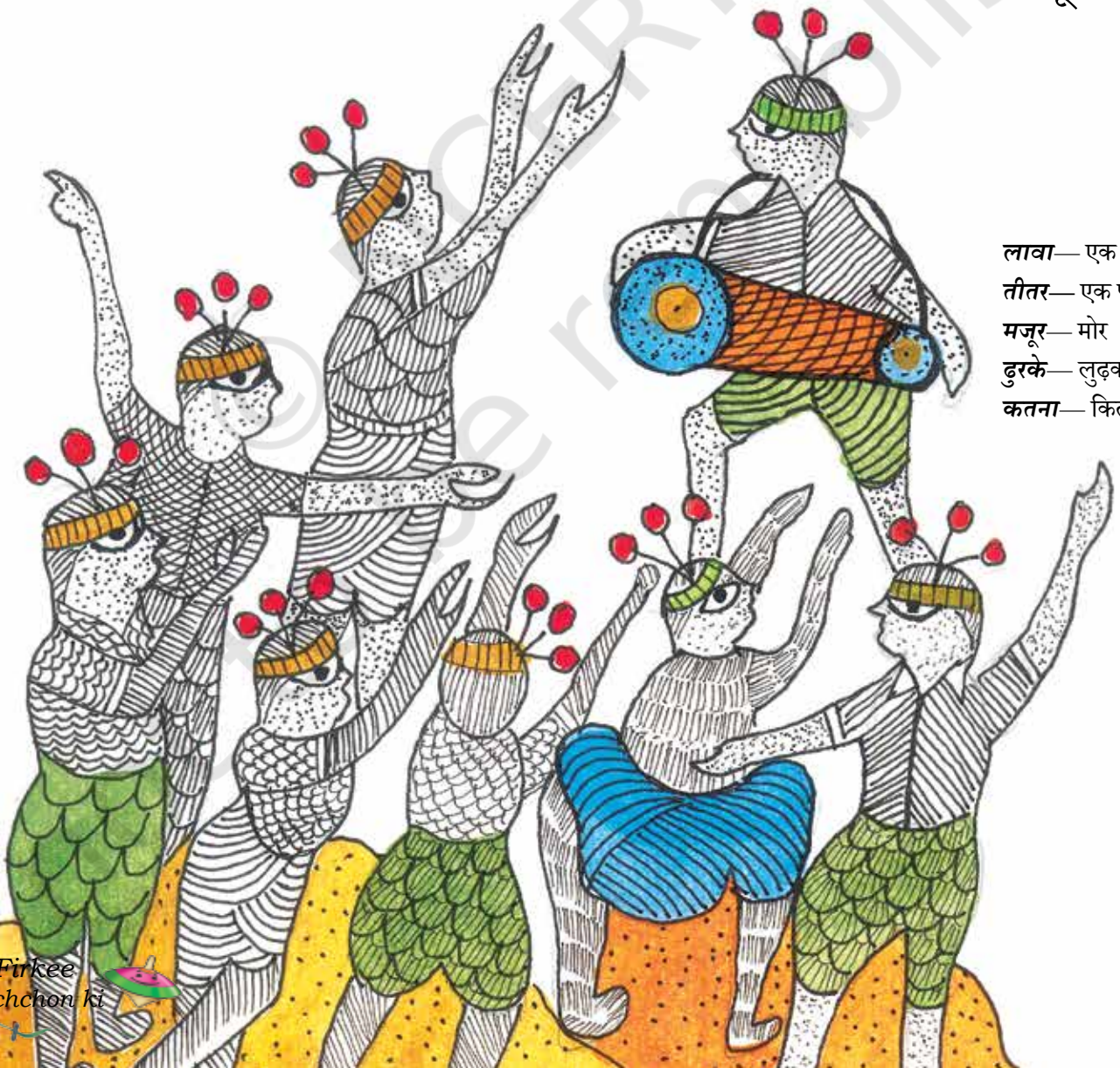
लावा— एक पक्षी
तीतर— एक पक्षी
मजूर— मोर
ढुरके— लुढ़कना
कतना— कितना
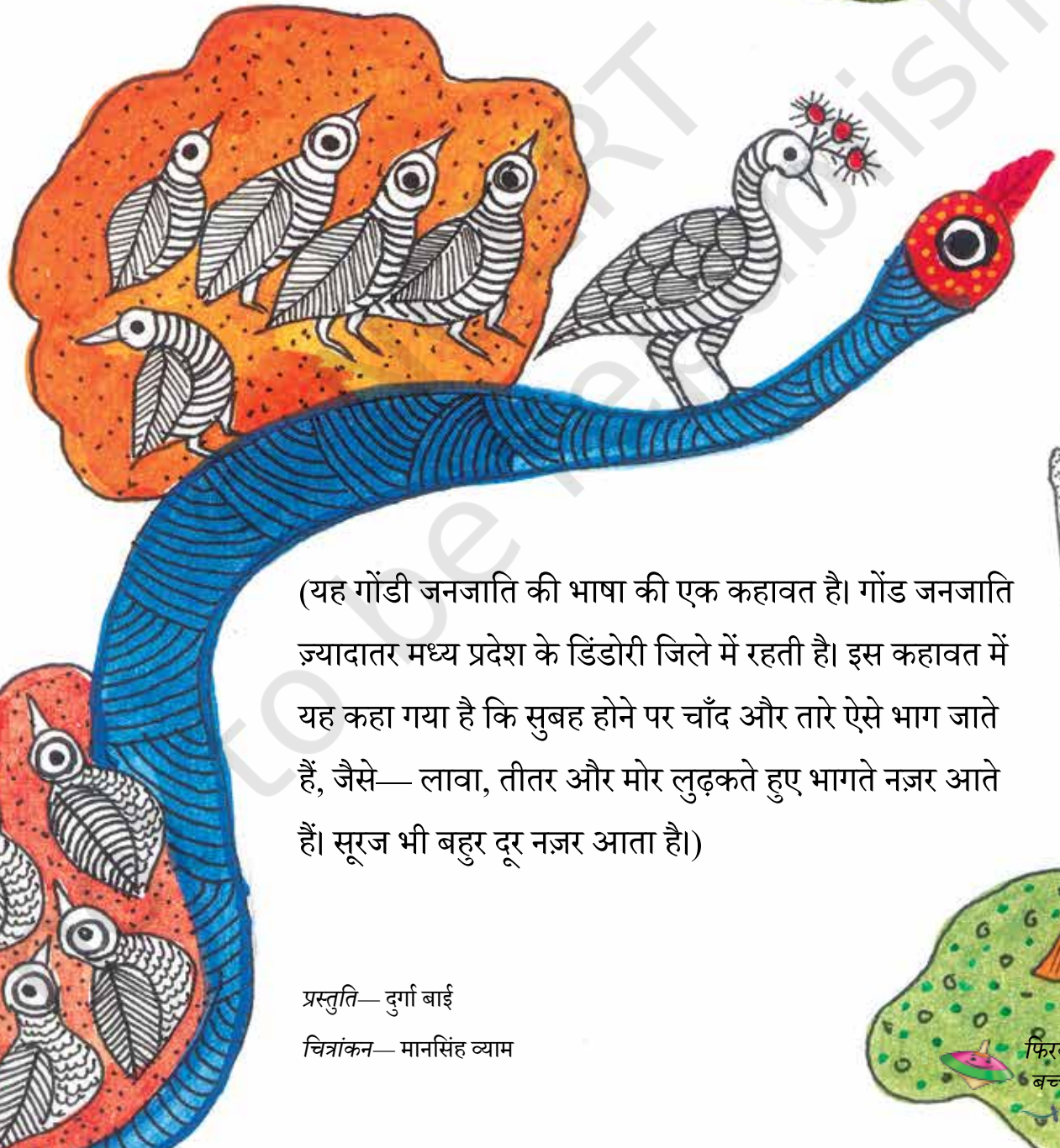
(यह गोंडी जनजाति की भाषा की एक कहावत है। गोंड जनजाति ज़्यादातर मध्य प्रदेश के डिंडोरी जिले में रहती है। इस कहावत में यह कहा गया है कि सुबह होने पर चाँद और तारे ऐसे भाग जाते हैं, जैसे— लावा, तीतर और मोर लुढ़कते हुए भागते नज़र आते हैं। सूरज भी बहुर दूर नज़र आता है।)

प्रस्तुति— दुर्गा बाई

चित्रांकन— मानसिंह व्याम
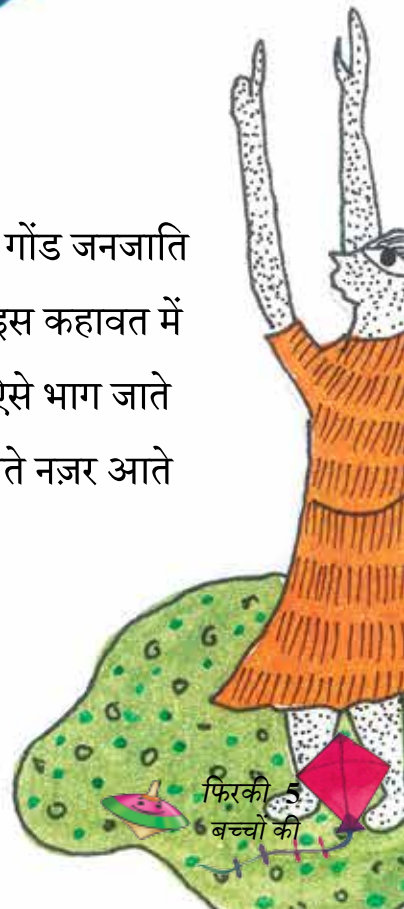
ईदगाह

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद ईद आई है। ईद पर मेला लगा है। हामिद दोस्तों के साथ मेला देखने जा रहा है। मेले में झूले लगे हैं। एक पैसा देकर चढ़ जाओ और पच्चीस चक्करों का मज़ा लो। हामिद दूर खड़ा है। उसके पास सिर्फ़ तीन पैसे हैं।

मेले में कई दुकानें हैं। सुंदर खिलौने हैं और मिठाइयाँ हैं। हामिद के दोस्तों ने खिलौने लिए और मिठाइयाँ भी खाईं। लेकिन हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं। उसने न तो खिलौना लिया और न ही मिठाई खाई।

हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। उसे याद आया कि दादी के पास चिमटा नहीं है। जब वे तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो उनका हाथ जल जाता है। उसने दुकानदार से पूछा, "यह चिमटा कितने का है?" दुकानदार बोला, "छह पैसे!" हामिद ने कहा, "तीन पैसे लोगे?" दुकानदार ने चिमटा दे दिया।

हामिद ने चिमटे को खिलौना बना लिया। उसने दोस्तों से कहा, “कंधे पर रखा तो बंदूक हो गई। हाथ में लिया तो फ़कीरों का चिमटा हो गया। अगर एक चिमटा जमा दूँ, तो तुम लोगों के सारे खिलौनों टूट जाएँगे। मेरा चिमटा बहादुर शेर है!”

मेला घूमने के बाद हामिद घर पहुँचा। दादी अमीना ने उसके हाथ में चिमटा देखकर कहा, “सारे मेले में तुझे और कोई चीज़ न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया!”

हामिद ने कहा, "तुम्हारी उंगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैं चिमटा ले आया।"

दादी खुशी से रोने लगीं। उन्होंने हामिद को गले लगाकर खूब प्यार किया और उसके लिए दुआएँ माँगीं।
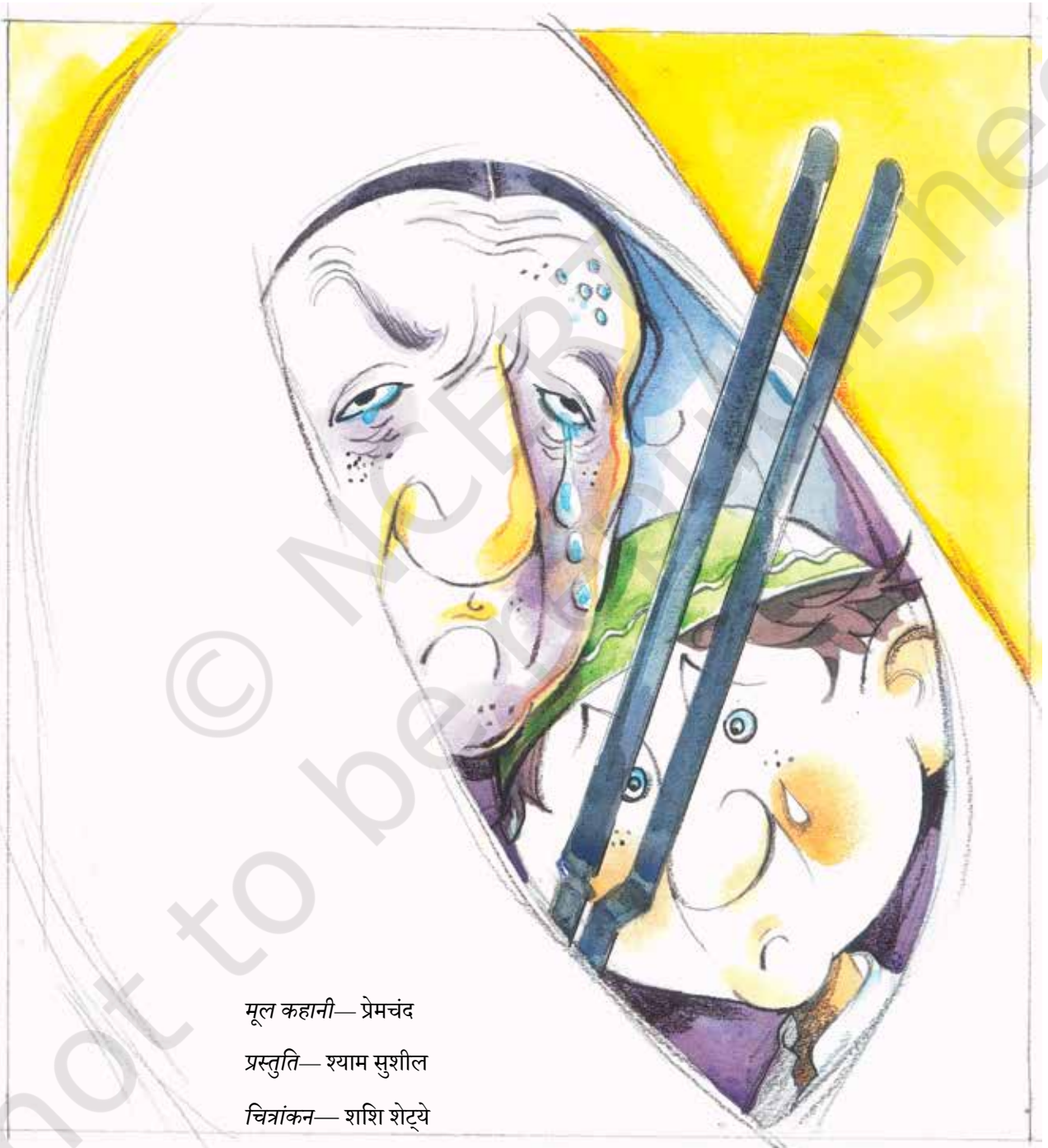
मूल कहानी— प्रेमचंद

प्रस्तुति— श्याम सुशील

चित्रांकन— शशि शेट्ये

किस्से और गीत
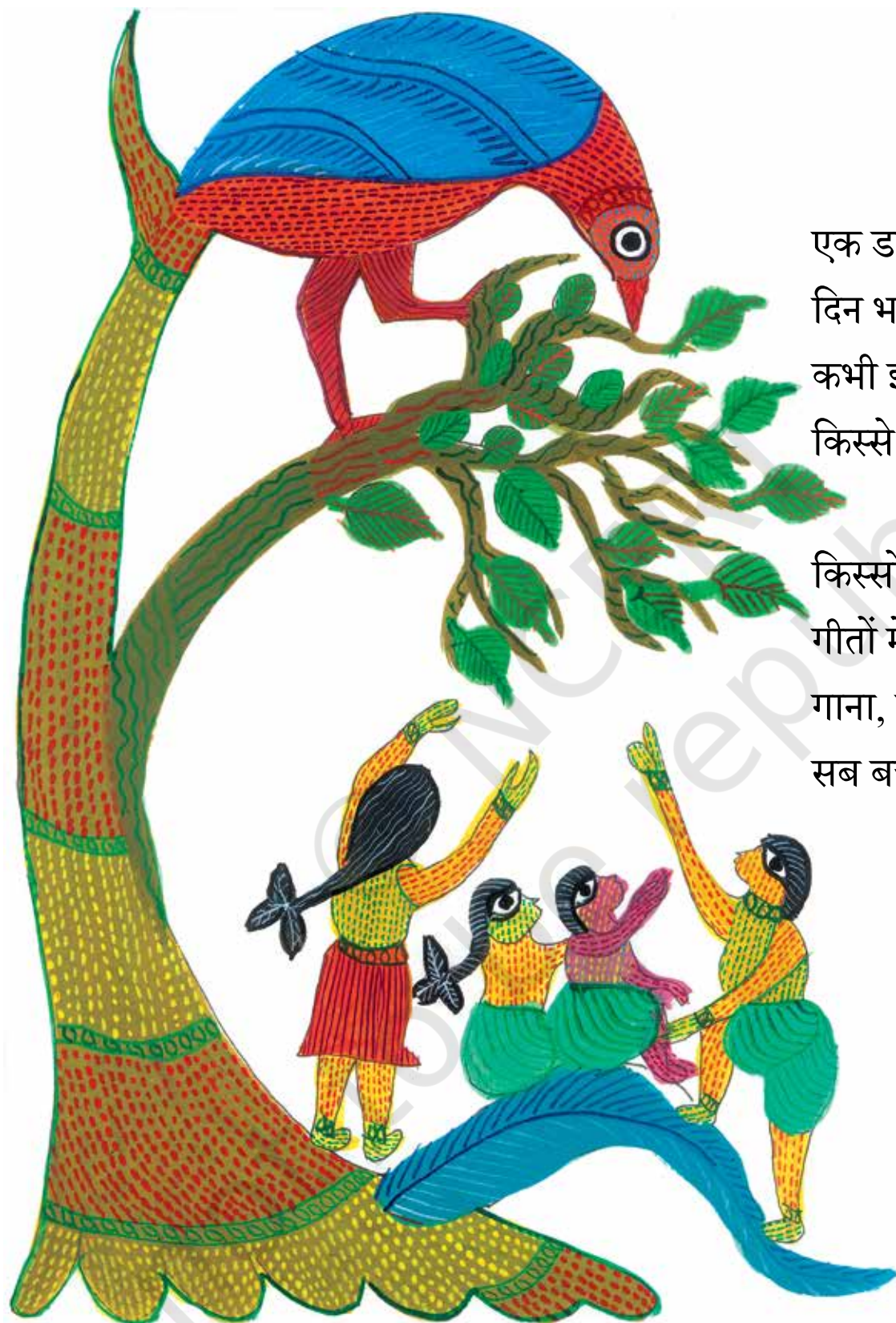
एक डाल पर बैठी चिड़िया,
दिन भर गाना गाए,
कभी इधर के, कभी उधर के,
किस्से नए सुनाए।

किस्सों में हैं राजा-रानी,
गीतों में बरखा की झड़ी,
गाना, किस्से, बरखा, रानी,
सब बच्चों के मन को भाए!

उषा शर्मा

चित्रांकन— दुर्गा बाई

कीचों - कीच
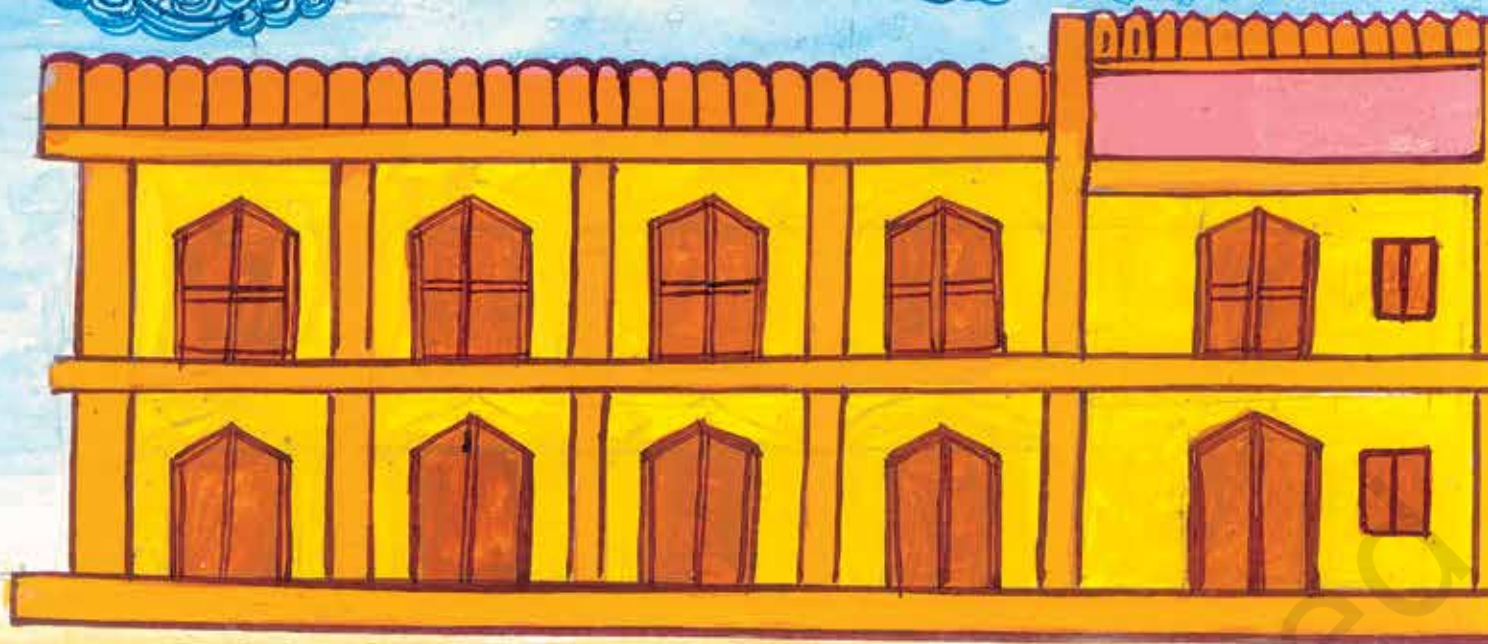
चित्रांकन— राधाश्याम राउत

हाथी आया हाथी आया

हाथी आया, हाथी आया,

मेरी गली हाथी आया,

केला उसे खिला दो मामा,

उसकी सूँड़ करे सलाम।

शिवानी, कक्षा 2
राजकीय हाईस्कूल, मुठी, जम्मू

चित्रांकन— शुभम बंसल

सरसर मेरे पैर पर,
चढ़ रहा था मूँगड़ा*,
एक पड़ा जो झापड़ा,
करने लगा भाँगड़ा।

आके टपकी

*मूँगड़ा— मोटा चींटा
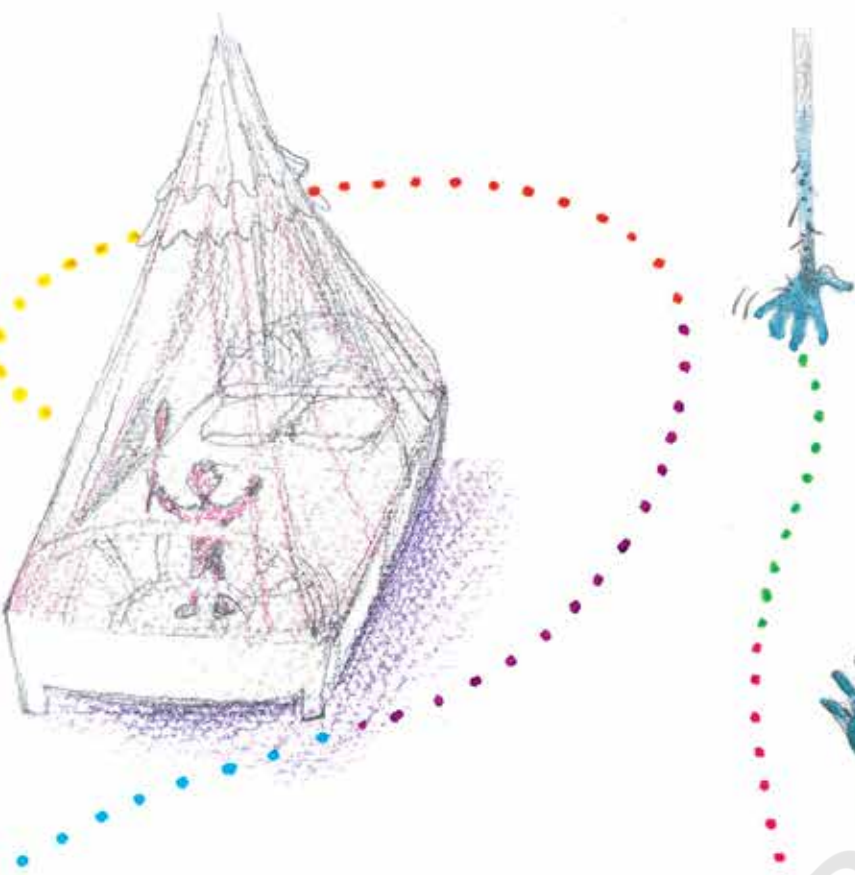
भिनभिन मेरे खाने पर,
घूम रही थी मक्खी,
खीर की कटोरी में,
धम्म से आके टपकी।

घूँघूँ कर मेरे कमरे में,
नाच रहा था मच्छर,
मच्छरदानी देखकर,
हो गया रफ़ूचक्कर।

नयना आडारकार

चित्रांकन— शशि शेट्ये

चटोरी चींटी

चटोरी चींटी ने चीनी चुराई,
हाथी ने देखा तो हँसी उसको आई,
चींटी ने हाथी के कान में फूँका,
मुँह अगर खोला तो,
बुरा होगा नतीजा।

श्याम सुशील

चित्रांकन— वृषाली जोशी
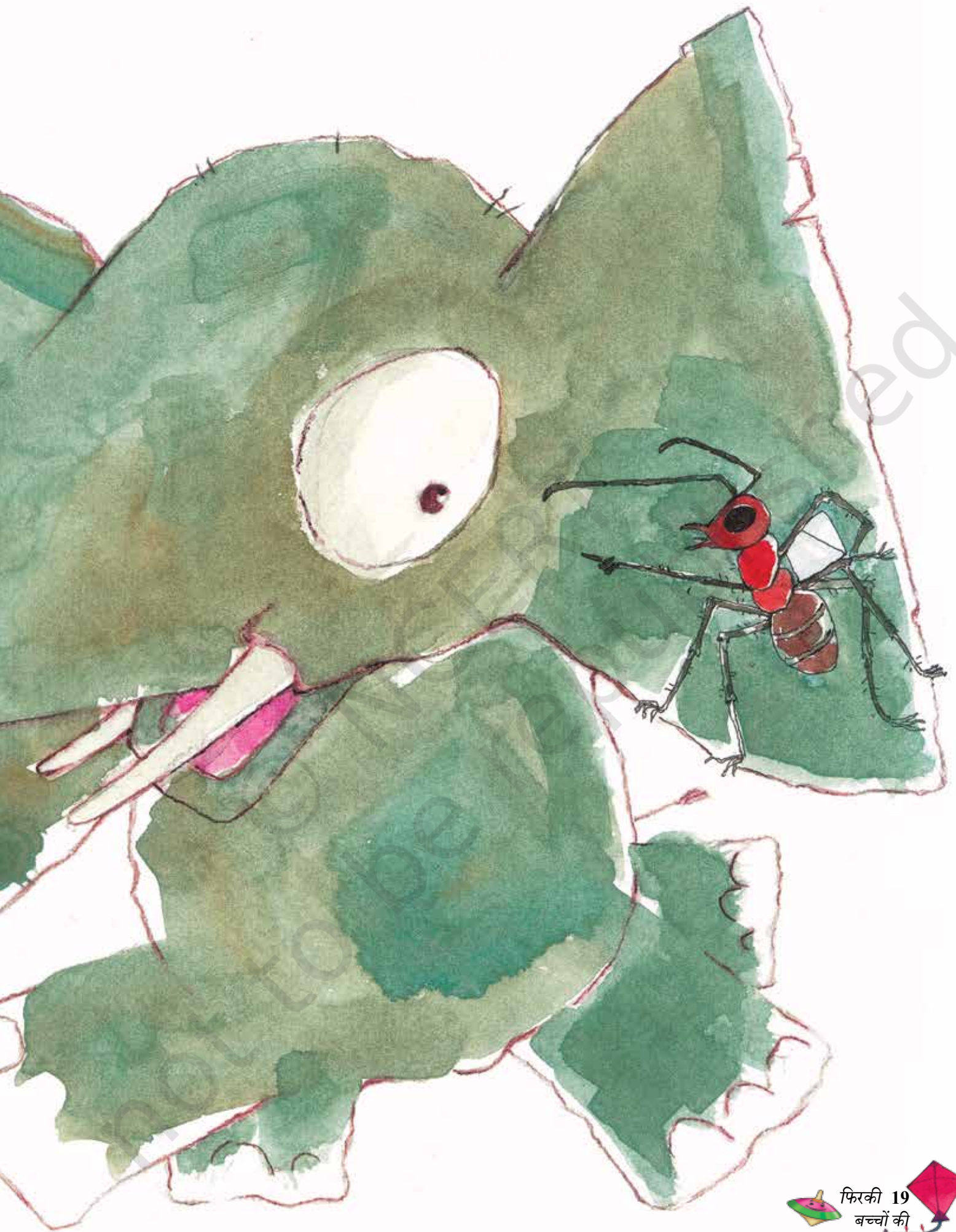
कुछ हम लिखें
कुछ तुम लिखो!
दिसंबर 2020
रविवार
सोमवार
1 मंगलवार
6
7
8
13
14
15
आज देर
तक सोया
20
21
22
27
28
29

बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
2	3	4	5
9 आज गणित की परीक्षा अच्छी गई	10	11	12
16	17	18	19
23	24	25	26
30	31		

Aunty Uma and Nimi
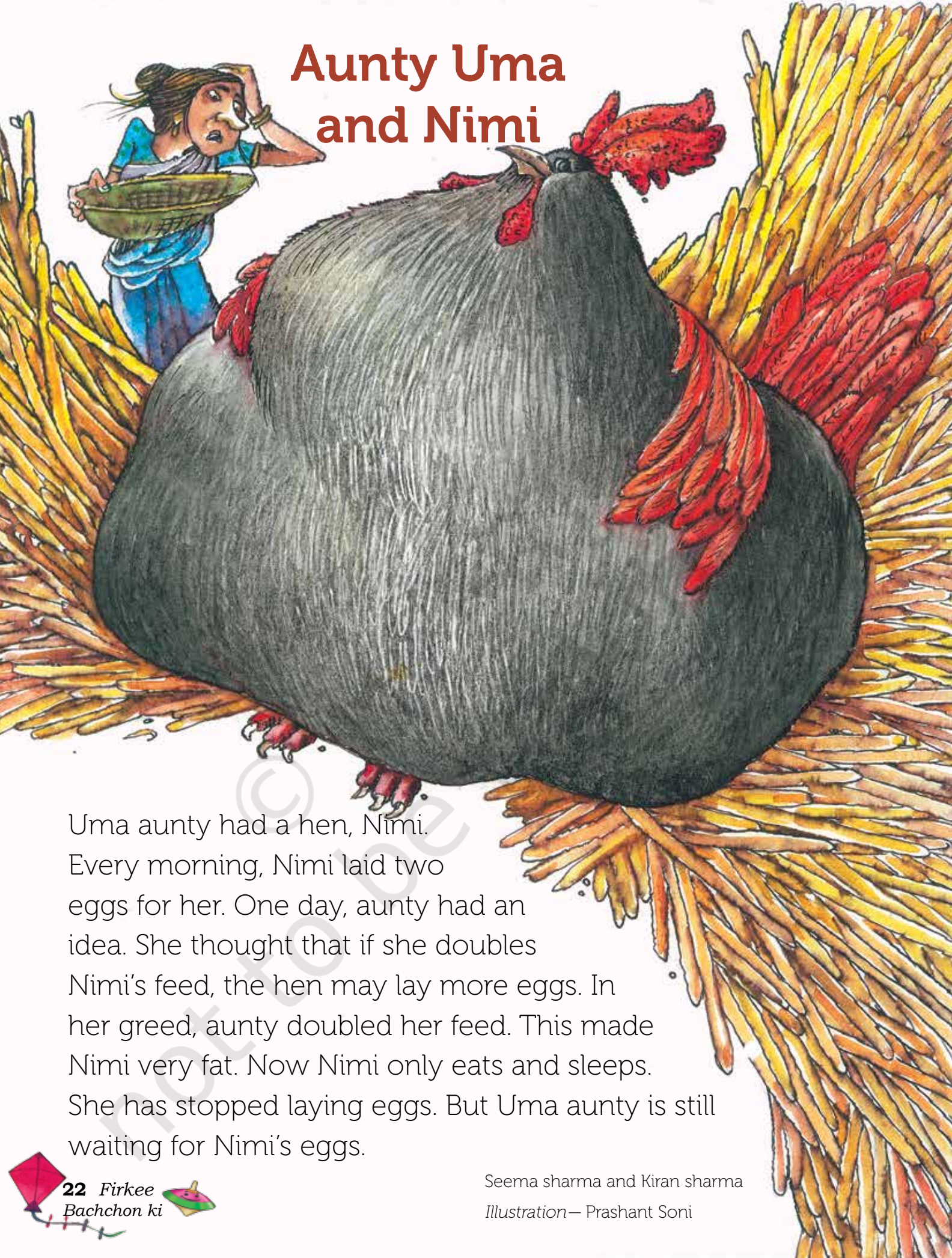
Uma aunty had a hen, Nimi. Every morning, Nimi laid two eggs for her. One day, aunty had an idea. She thought that if she doubles Nimi's feed, the hen may lay more eggs. In her greed, aunty doubled her feed. This made Nimi very fat. Now Nimi only eats and sleeps. She has stopped laying eggs. But Uma aunty is still waiting for Nimi's eggs.

Seema sharma and Kiran sharma

Illustration— Prashant Soni

देखो, मैंने क्या बनाया!

सुंदरम — कक्षा 2, कबीर कॉलोनी, जम्मू

सनी — कक्षा 2, मुठि, जम्मू

पूजा — कक्षा 3, कबीर कॉलोनी, जम्मू

तनीशा — कक्षा 5, कबीर कॉलोनी, जम्मू

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: अनूप कुमार राजपूत
मुख्य संपादक	: श्वेता उप्पल
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: अरुण चितकारा
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी)	: विपिन दिवान
उत्पादन सहायक	: प्रकाश वीर सिंह

संपादन मंडल

मूल संकल्पना	रीडिंग डेवलपमेंट सेल
शैक्षणिक संपादक	उषा शर्मा
संपादन मंडल	कीर्ति कपूर ज्योत्स्ना तिवारी मीनाक्षी खार श्वेता उप्पल संध्या सिंह
सहयोग	किरन शर्मा मीनाक्षी
साज-सज्जा	राजेश हांडा, डिजिटल एक्सप्रेज़

सुझावों तथा प्रतिक्रियाओं के लिए संपर्क करें

उषा शर्मा (शैक्षणिक संपादक)
समग्र शाला भाषा कार्यक्रम
कक्ष संख्या 307, तीसरी मंज़िल, जी.बी. पंत ब्लॉक
एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग,
नयी दिल्ली 110016
दूरभाष— 011-26592293
ईमेल— earlyliteracy.ncert@gmail.com

PD 5T SU

100 जी.एस.एम. आर्ट पेपर पर मुद्रित

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा पुष्पक प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, 203-204 डी.एस.आई.डी.सी. शेड्स, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फ़ेज़-I, नयी दिल्ली 110 020 द्वारा मुद्रित।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

झूलम-झूली

माटी-माटी खेलें,
आओ पानी-पानी खेलें,
धरती में बीजों को बोएँ,
खेल किसानी खेलें।

छुप्पम-छुप्पी खेलें,
आओ झूलम-झूली खेलें,
चढ़ें पेड़ पर पकड़म-पकड़ी,
कूदम-कूदी खेलें।

श्याम सुशील

चित्रांकन— शुभम लखेरा

मूल्य— ₹ 35.00

Registration No.— DELBIL/2019.77753